20-09-12

कीट विज्ञान को अपनाकर किसानों ने पैदा किया खुद का कीट ज्ञान

'ज्ञान व विज्ञान जनता पैदा करती है'

किसान पाठशाला में खाप चौधरियों ने की किसान-कीट विवाद की सुनवाई

आज समाज नेटवर्क

जींद। ज्ञान, विज्ञान और तकनीक देश के विकास की धुरी होती है। ज्ञान व विज्ञान को जनता पैदा करती और यह जनता के ही काम आता है। लेकिन तकनीक व्यापार को ध्यान में रखकर पैदा की जाती है और तकनीक जनता की बजाए पैदा करने वाले के ही काम आती है। यह बात कृषि विकास अधिकारी डॉ. सुरेंद्र दलाल ने मंगलवार को निडाना गांव की किसान खेत पाठशाला में खाप पंचायत की 13वीं बैठक में कही। बैठक की अध्यक्षता सर्वखाप पंचायत के संयोजक कुलदीप ढांडा ने की। इस अवसर पर बैठक में कुंडू खाप कालवा के प्रधान सुभाष कुंडू, प्रसिद्ध समाजसेवी देवव्रत ढांडा, बागवानी विभाग से डीएचओ डॉ. बलजीत भ्याण व पेहवा से आए प्रगतिशील किसान शीतल राम भी मौजूद थे। डॉ. दलाल ने कहा कि देश में 26 से भी ज्यादा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटियां है और इन यूनिवर्सिटियों की स्थापना देश में तकनीक को बढ़ावा देने के लिए ही की गई थी।

कीट सर्वेक्षण के बाद बही खाते में कीटों के आंकड़े दर्ज कराते किसान।

डॉ. दलाल ने कहा कि आज कृषि क्षेत्र में कीटनाशकों का जो प्रयोग बढ़ रहा है वह भी तकनीक का ही एक हिस्सा है। लेकिन निडाना के किसानों ने कोई नई तकनीक अपनाने की बजाए कीट विज्ञान को अपना कर अपना खुद का कीट ज्ञान पैदा किया है। उन्होंने कहा कि कीट ज्ञान का मतलब फसल में कीटों के क्रियाकलापों को समझना व कीटों का परखना है। पाठशाला की शुरुआत फसल में कीट सर्वेक्षण से की गई। कीट कमांडो किसानों ने कीटों का सर्वेक्षण कर खाप प्रतिनिधियों के सामने फसल में मौजूद कीटों का आंकड़ा रखा। इस दौरान आसपास के गांवों से आए किसानों ने कीट बही खाते में अपने-अपने कपास के खेत से तैयार किए गए फल, फूल व बोकी का आंकड़ा भी दर्ज करवाया। किसानों द्वारा दर्ज कराए गए आंकड़े में फल की प्रति पौधा औसत 60 से 80, फूल की 1 से 3 तथा बोकी की 7 से 12 की औसत आई। ईंटल कलां से आए किसान चतर सिंह ने बताया कि इस समय पौधे को फूल व बोकी की बजाए फल की ज्यादा चिंता रहती है। ताकि भविष्य में भी उसकी वंशवृद्धि हो सके। इसलिए पौधा बोकी व फूल की बजाए फल की तरफ ज्यादा ध्यान देता है। इस समय पौधे को ज्यादा खुराक की जरूरत होती है। इसलिए किसानों को इस समय पौधे को पर्याप्त मात्रा में खुराक देने के लिए जिंक, यूरिया व डीएपी का छिड़काव करना चाहिए। किसान अजीत ने बताया कि जिंक, यूरिया व डीएपी के छिड़काव का प्रभाव चार घंटे में ही नजर आने लगता है, जबकि जमीन में डाले गए खाद का प्रभाव तीन से चार दिन बाद नजर आता है। अलेवा से आए किसान जोगेंद्र ने बताया कि उसकी पोली हाउस में लगी शिमला मिर्च की फसल में ग्रास होपर का प्रकोप काफी बढ़ गया था। जिससे भयभीत होकर उसने फसल में कीटनाशक का स्प्रे किया, लेकिन कीटनाशक से भी अच्छा परिणाम नहीं मिला। इसके बाद उसने पोली हाउस में मकड़ियां छोड़ दी और मकड़ियों ने बड़ी आसानी से ग्रास होपर को कंट्रोल कर लिया।

खाप प्रतिनिधि को स्मृति चिह्न भेंट करते किसान। आज समाज

किसान सुरेश ने बताया कि उन्होंने रामकली व चाबरी गांव में कीटनाशक रहित 57 एकड़ धान की फसल में 307 पौधों का निरीक्षण किया था। जिसमें से मात्र सात पौधों पर ही गोभ वाली सुडियां थी। जबकि जिन किसानों ने कीटनाशकों का प्रयोग किया है उनकी फसल में इन सुडियों की तादाद ज्यादा है। किसानों ने खाप प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न देकर उनका स्वागत किया गया।

किसानों के अनुभव को किया कैमरे में कैद: लोकसभा चैनल दिल्ली की टीम ने मंगलवार को किसान खेत पाठशाला में पहुंचकर किसानों के अनुभव को अपने कैमरे में कैद किया। चैनल की असिस्टेंट डायरेक्टर प्रियंका ने एडिटर अमल, प्रोडेक्शन एसिस्टेंट शनि व कैमरामैन मुन्ना के साथ गुरुवार को प्रसारित होने वाले विज्ञान दर्पण तथा शुक्रवार को प्रसारित होने वाले साइंस दिस विक कार्यक्रम की शूटिंग के लिए यहां पहुंची थी। चैनल की टीम ने सुबह आठ से 12 बजे तक निडाना में किसान खेत पाठशाला के किसानों तथा 12 बजे से दोपहर दो बजे तक ललीतखेड़ा में महिला किसानों के क्रियाकलापों व उनके अनुभव की रिकार्डिंग की।

17-09-12

धान की फसल पर पाइरिला के डंक का कहर

■ कृषि विभाग के अधिकारी कीटनाशकों की बजाए खाद के स्प्रे के प्रयोग की दे रहे हैं सलाह

नरेंद्र कुंडू

जींद। धान की फसल में पाइरिला के निम्प (अल्ह) की दस्तक के कारण किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें बढ़ने लगी है। पाइरिला के डंक ने किसानों के सपनों में सेंध लगा दी है। फिलहाल पाइरिला ने ज्वार व गन्ने की फसलों के आस-पास की धान की फसलों में दस्तक दी है। फसल में पाइरिला के प्रकोप के कारण किसानों को फसल की सुरक्षा की चिंता सताने लगी है। किसान अचानक धान की फसल में हुए पाइरिला के निम्प के प्रकोप से इजाद पाने की तरकीब ढुंढ़ रहे हैं। कृषि विभाग के अधिकारी किसानों को धान की फसल को पाइरिला के निम्प के प्रकोप से बचाने के लिए किसी प्रकार के कीटनाशक की बजाए पोटास, यूरिया व जिंक के मिश्रण के स्प्रे का प्रयोग करने की सलाह दे रहे हैं। कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना है कि धान की फसल में मौजूद मासाहारी कीट ही पाइरिला के लिए कीटनाशक का काम करते हैं।

किसान रामकुमार, दयाकिशन, रामकरण ने बताया कि पाइरिला के निम्प ने उनकी फसल में दस्तक दे दी है। पाइरिला के आक्रमण के कारण उनकी धान की फसल सुखने लगी है। किसानों का कहना है कि पाइरिला कीट को धान की

धान के पौधों पर मौजूद पाइरिला कीट।

देखा है। किसानों का कहना है कि अभी तक यह कीट केवल ज्वार व गन्ने की फसल के आस-पास वाले धान के खेतों में नजर आया है।

कृषि विकास अधिकारी डा. सुरेंद्र दलाल ने बताया कि किसानों को इस कीट से डरने की जरुरत नहीं है। इस कीट को कंट्रोल करने के लिए धान की फसल में काफी संख्या में मासाहारी कीट मौजूद होते हैं। धान की फसल में मौजूद परजीवी कीट इसकी पीठ पर बैठकर इसका खून पी कर इसका खात्मा कर देते हैं। इसके अलावा धान की फसल में मौजूद लोपा,

फुदक कर एक जगह से दूसरी जगह जाता है। इसलिए धान की फसल में मौजूद मासाहारी कीट पाइरिला के प्रौढ़ व शिशुओं का बड़ी आसानी से शिकार कर लेते हैं। पाइरिला के प्रकोप के कारण धान के पौधों में केवल रस की कमी हो सकती है और रस की कमी के कारण ही पौधा सुखता है। किसान पौधों में रस की कमी को पूरा करने के लिए अढ़ाई किलो पोटास, अढ़ाई किलो यूरिया व आधा किलो जिंक का 100 लीटर पानी में घोल तैयार कर धान की फसल में स्प्रे करें। इससे पौधों में रस

रस चूसक कीट है पाइरिला

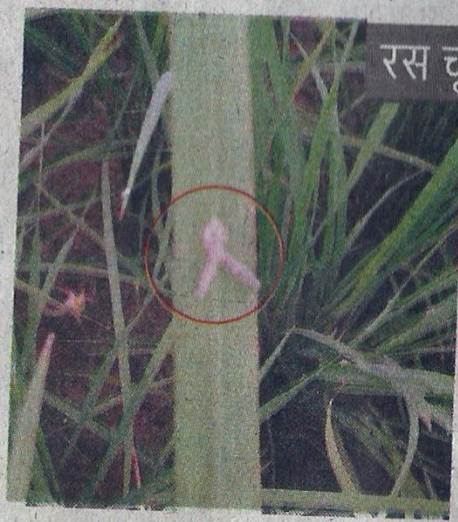

कृषि विकास अधिकारी डा. सुरेंद्र दलाल ने बताया कि पाइरिला के प्रौढ़ व बच्चे दोनों ही शाकाहारी क्रीट हैं। इस कीट के पीछे दो पूंछ होती हैं और इसके मुहं के स्थान पर डंक होता है, जिसकी सहायता से यह पत्तों का रस चूसकर अपना जीवनचक्र चलाता है। इस कीट का रंग सफेद होता है और यह बिल्कुल मच्छर के आकार का होता है। पाइरिला कीट ज्वार व गन्ने की फसल में ज्यादा पाया जाता है। इस समय ज्वार की फसल के पत्ते सुख जाने के कारण उनमें रस कम रह जाता है। इसलिए यह अपनी वंशवृद्धि के लिए दूसरी फसल की तरफ अपना रूख कर लेता है।